एक दिलचस्प मुलाकात

सत्यजीत राय

गली के मोड़ पर पहुँचते ही लाइट चली गई। रात का समय, मूसलाधार बारिश और उस पर घोर अँधेरा! खैर, घर तक तो पहुँच ही जाऊँगा। एक कतार में तीन-तीन मंज़िल के एक जैसे अपार्टमेंट हैं। तीसरे अपार्टमेंट की तीसरी मंज़िल पर बाईं तरफ वाला फ्लैट मेरा है। टटोलते-टटोलते पहुँच ही जाऊँगा। बशर्ते, रास्ते में किसी गड्ढे में पैर देकर या किसी चीज़ से टकराकर कीचड़ में गिर ही न पड़ूँ।

और मैं पहुँच भी गया। सीढ़ियों के मोड़ गिनने से अन्दाज़ा हो गया कि यह पहली मंज़िल है, यह दूसरी और अब यह तीसरी। थोड़ी-सी खाली जगह, बाएँ मुड़ो और अपना फ्लैट।

ताला खोलने को हाथ बढ़ाया तो ताला गायब! दरवाज़े को धीरे-से धकेला तो दरवाज़ा पूरा खुल गया। क्या चक्कर है भाई! क्या सुबह जल्दी-जल्दी में ताला लगाए बगैर ही ऑफिस चला गया था? हो सकता है। मेरे जैसे लापरवाह आदमी के लिए यह नामुमकिन नहीं। लेकिन फिर चाबी? चाबी मेरी जेब में कैसे है? अगर मैं ताला लगाना भूल गया होता तो चाबी ताले में ही होती, मेरी जेब में कैसे आती?

क्या चक्कर है?

टटोलकर दरवाज़े के पीछे भीगा छाता टाँगा और पाँव घसीटते हुए घर के भीतर कदम रखा। अभी दूसरा कदम बढ़ाया ही था कि किसी चीज़ से टकराया। टटोलकर देखा कि कुर्सी थी। यह कुर्सी यहाँ बीच में कैसे आ गई? इसे तो खिड़की के पास कोने में होना चाहिए था! कुर्सी को पकड़-पकड़कर आगे बढ़ा तो पेट मेज़ से टकराया। मेज़? यहाँ? अँधेरे में धीरे-से कहा। उसी समय बादल ज़ोर से गरजे। आवाज़ गले में ही फँसी रह गई।

कहीं ऐसा तो नहीं कि कोई चोर चोरी करने की नीयत से घर में घुसा हो? एक कुँवारे आदमी के फ्लैट में उसे क्या मिलेगा? पर क्यों? चार जोड़ी कपड़े भी कम नहीं होते! और दीवार घड़ी? और डेढ़ हज़ार रुपए जो मैंने आड़े वक्त के लिए सन्दूक में रख छोड़े हैं? कहीं सब कुछ साफ तो नहीं हो गया?

चित्रः अतनु राय

अँधेरे में आँखें फाड़-फाड़कर देखने की कोशिश की। कुछ नज़र नहीं आया। खिड़कियाँ बन्द थीं। उन पर परदे पड़े हुए थे। काश! मैं सिगरेट पीता होता! उस सूरत में जेब में माचिस या लाइटर तो होता। वैसे कायदे से तो इस मौसम में एक टॉर्च भी हमेशा साथ में रखना चाहिए। लेकिन किसे पता था कि आज दफ्तर में इतनी देर हो जाएगी और बगैर चेतावनी अचानक इतनी तेज़ बारिश आ जाएगी। और फिर ऊपर से बत्ती भी गुल!

सोचा, सबसे पहले खिड़की खोलता हूँ। बाहर एक पल के लिए भी बिजली चमकी तो उसकी रोशनी में सब कुछ समझ में आ जाएगा।

मेज़ का किनारा पकड़कर आगे बढ़ा तो सर्र से फर्श पर कुछ सरका।

मेरा दिल ज़ोर से धड़का। क्या कोई है? क्या कोई भागने की कोशिश कर रहा है? मैं चिल्लाता क्यों नहीं? मेरी आवाज़ कहाँ गई?

खिड़की की तरफ बढ़ा ही था कि दाहिनी तरफ एक आदमी खड़ा नज़र आया। स्थिर, अचल, भीत, शंकालु, हमला करने को तैयार। मेरी रीढ़ तक झुरझुरी फैल गई। टाँगें काँपने लगीं। चोर। ज़रूर चोर है। अँधेरे में खड़ा है हाथ में नंगा चाकू लिए। प्रतीक्षा में घात लगाए। एक कदम और आगे बढ़ा होता तो उसका चाकू मेरे पेट में घुस चुका होता!

"कौन है?" मैं फुसफुसाया।

कोई जवाब नहीं। क्यों जवाब देगा?

"कौन है उधर?" खाली कमरे में आवाज़ गूँजी।

मैंने टटोलकर मेज़ पर पड़ा फूलदान उठाया। जवाबी हमले के लिए मेरे हाथ में भी कुछ होना चाहिए।

लेकिन वह भी हाथ हिला रहा था। मानो कुछ उठा रहा हो।

मैंने सिर हिलाया। उसने भी सिर हिलाया।

उसकी भीरूता और कायरता ने मुझमें ज़बर्दस्त साहस भर दिया।

अब मैं झपट्टा मारकर उसे दबोच सकता हूँ। मैंने आगे की तरफ छलाँग लगाई... और किसी सख्त चीज़ से टकराया। ज़ोर की आवाज़ हुई। नाक पर, ठोड़ी पर लगी। दर्द हुआ? क्या मैं चोर से टकरा गया था?

किसी के कदमों की, भागने की आवाज़ नहीं आई।

टटोलकर देखा तो पता चला अलमारी से टकरा गया हूँ जिसके शीशे में दिखाई देते अपने ही धुँधले प्रतिबिम्ब को मैं चोर समझ बैठा था।

इसी समय रसोई से किसी बरतन के गिरने की आवाज़ आई। ज़ोर से। क्या चोर मुझे धक्का देकर रसोई में चला गया है और वहाँ अँधेरे में किसी चीज़ से टकरा गया है?

लेकिन नहीं। चोर वहम है। अलमारी और उसका आईना ठोस हकीकत है। हाथ उसे अँधेरे में भी छू सकते हैं, महसूस कर सकते हैं।

लेकिन मेरे पास कहाँ थी अलमारी? मेरे कमरे में लोहे की अलमारी कहाँ से आई।

एकदम साफ हो गया। सब कुछ एकदम साफ हो गया। सारी बात समझ में आ गई। मैं गलती से किसी दूसरे के फ्लैट में घुस गया हूँ। यह फ्लैट मेरा है ही नहीं। या तो मैं

एक झटके से सारी बात समझ में आ गई। मैं गलती से किसी दूसरे के फ्लैट में घुस गया हूँ। यह फ्लैट मेरा है ही नहीं। या तो मैं सीढ़ियाँ चढ़ते समय मोड़ गिनने में भूल कर गया या शायद चौथी मंज़िल तक निकल आया। या, यह दूसरी मंज़िल का ही कोई फ्लैट तो नहीं? सब तो एक जैसे हैं। अब अँधेरे में पता चले भी तो कैसे?

दिमाग तेज़ी से दौड़ने लगा। बारिश लगभग रुक गई थी लेकिन अँधेरा बरकरार था। सबसे पहले, जैसे भी हो, फटाफट यहाँ से निकल लेना चाहिए। कहीं लाइट आ गई तो सब चोर समझकर पकड़ लेंगे और मरम्मत कर डालेंगे। हे भगवान! कहाँ फँसाया!

टटोलता-टटोलता दरवाज़े की तरफ आया तो दीवार से टकरा गया। वहाँ दीवार थी। दरवाज़ा कहाँ है? अब मुझे दरवाज़ा ही नहीं मिल रहा था। और इससे पहले कि मैं दरवाज़ा ढूँढ पाता, किसी के सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ सुनाई दी। धीरे-धीरे जमा-जमाकर रखे गए कदम। हल्की-हल्की हँफनी। कोई आ रहा है! कौन? कहीं इसी फ्लैट का मालिक तो नहीं? वह आते ही दरवाज़ा खुला पाकर शोर मचाएगा, टॉर्च जलाएगा, मुझे देखकर चोर-चोर चिल्लाएगा, लोग इकट्ठे हो जाएँगे और...

मैं पसीना-पसीना हो गया। तभी ज़ोर से बादल गरजे और बिजली चमकी। बिजली की क्षणिक चौंध में मुझे दरवाज़ा दिख गया। मैं लपका और दरवाज़े के पल्ले के पीछे छिपकर खड़ा हो गया। यही ठीक रहेगा। मैं उसे भीतर घुसने दूँगा। यदि वह यहीं आ रहा है तो। और फिर इससे पहले कि वह कुछ कर पाए मैं एकदम से बाहर सटक लूँगा और सीढ़ियाँ उतर जाऊँगा।

लेकिन अभी मैं दरवाज़े तक पहुँचा ही था कि लाइट आ गई। दिल इतनी ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा मानो छाती फाड़कर बाहर निकल आएगा। अब? अब क्या करूँ? मारूँ साले को पीछे से सिर पर?

एक मोटा गंजा-सा आदमी भीतर घुसा। तर-बतर। सबसे पहले उसने मुझे देखा। देखकर मुस्कराया और धीरे-से सीटी बजाई।

म...म....म्... माफ कीजिएगा मैं अँधेरे में... तीसरी मंज़िल... यानी अपना मकान समझकर... नहीं नहीं... मैं यानी....मैं हकलाया।

मोटा हँसा। ठहाका लगाकर हँसा।

"और, मैं गलती से आपके मकान में घुस गया था।" वह बोला। "खैर! घबराइए नहीं। इसी बहाने मुलाकात हुई। वरना तो एक ही बिल्डिंग में रहते हुए जाने कब तक अजनबी बने रहते। बैठिए। अदरकवाली चाय बनाते हैं।" मैं संज्ञा शून्य था।

– पुनर्लेखनः स्वयंप्रकाश